प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य श्री महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर – 331 403

जनप्रतिनिधि सम्मेलन

लोकतंत्र आत्मानुशासन का प्रयोग है : आचार्य महाप्रज्ञ

सरदारशहर 5 मई।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित जनप्रतिनिधि सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि लोकतंत्र आत्मानुशासन का प्रयोग है। इतनी शासन प्रणालियां है। पूर्णतया निर्दोष प्रणाली कोई नहीं होती पर अधिकाधिक निर्दोश प्रणाली लोकतंत्र है। लोकतंत्र अच्छी तरह से तभी चल सकता है जब संचालक वर्ग में योग्यता हो। इस बात पर चिंतन आवश्यक है कि संचालकों में योग्य व्यक्तियों का निर्माण हो रहा है या नहीं। आज जनता में लोकतंत्र की चेतना जागृत नहीं है। केवल वोट देने तक ही लोकतंत्र नजर आता है, इसलिए सबको लोकतंत्र का प्रशिक्षण देना जरूरी है।

राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि हर एक का अपना दर्शन होता है। पर वर्तमान में समाज एवं राजनीतिज्ञों का कोई दर्शन नजर नहीं आता। बड़ी–बड़ी पार्टी के कार्यकर्त्ताओं को अपनी पार्टी का दर्शन ज्ञात नहीं होता। ऐसी स्थिति में वे जनता की सेवा कैसे कर पायेंगे। उन्होंने सामाजिक रूढियों के बदलाव पर जोर देते हुए कहा कि समाज में व्याप्त रूढ़ियों के कारण समस्याएं ज्यादा बढ़ रही है। उन रूढ़ियों के कारण ही शादी विवाह में पदार्थों की भरमार होती है। प्राचीन समय पंचायत का नियंत्रण होता था। उसके द्वारा निर्धारित संख्या के उपरांत करोड़पति भी व्यंजन नहीं बना सकता था। आज वह नियंत्रण समाप्त हो गया है। अणुव्रत के कार्यकर्त्ता इस ओर ध्यान दे कि यहां पर शादी विवाह में 11 द्रव्यों से ज्यादा भोजन में सामग्री न हो और बिना दहेज के विवाह हो। जब ऐसा होने लग जायेगा तो अनेक समस्याएं अपने आप सुलझ जायेगी। समाज में ऐसे छोटे परिवर्तनों की जरूरत है। बड़े परिवर्तन तो सत्ताधारी कर सकते हैं। पर छोटे परिवर्तन आज से ही प्रारंभ हो जाने चाहिए। जब समाज व्यवस्था नहीं बदलेगी तो समाज में अच्छे व्यक्ति नहीं मिलेंगे और समाज में योग्य व्यक्ति नहीं होंगे तो राजनीति में योग्य व्यक्ति होंगे यह आशा नहीं करनी चाहिए।

राष्ट्रसंत ने कहा कि जो सत्ता पर है वे समाज की रूढ़ियों पर ध्यान कम देते हैं। वे लोग केवल अपराध पर ध्यान देते हैं। समाज हो, राजनीति हो या धार्मिक क्षेत्र हो सब जगह बड़े–बड़े घोटाले चल रहे हैं। हमें ऐसे स्थानों की खोज करनी है जहां पर चोट करने से समाधान प्राप्त हो जाता है। अणुव्रत के कार्यकर्त्ता स्वयं अणुव्रत के

दर्शन को गहराई से समझकर समाज के दर्शन को समझे। जब ऐसा होगा तभी दृष्टिकोण को बदल सकते हैं।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि लोकतंत्र में जनता का राज होता है। जो जनता के दिल को जीत लेता है वह बड़ी अर्हता प्राप्त कर लेता है। जनप्रतिनिधियों को पहले खुद पर अनुशासन करना सीखना चाहिए फिर दूसरों पर शासन करने की सोचे। लोकतंत्र में अनुशासन और कर्त्तव्य भावना होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अणुव्रत आन्दोलन में व्यापक ध्यान दिया गया है। शिक्षक, विद्यार्थी, चुनाव आदि सभी विषयों पर नियम बनाये गये हैं। जिनके द्वारा हर क्षेत्र में सुधार संभव है।

युवाचार्यप्रवर ने कहा कि जनप्रतिनिधियों का फर्ज होता है जनता की सेवा करना। अगर सत्ता में आने के बाद सेवा नहीं करता है तो उसका जीवन व्यर्थ चला जाता है। उन्होंने जनप्रतिनिधियों को ईमानदारी और नशामुक्ति की प्रेरणा दी एवं पॉलिथिन थैलियों के प्रयोग को हिंसा का कारण बताया। उन्होंने पोलिथिन थेलियों को घर से बाहर न फैंकने का भी संकल्प दिलवाया।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने कहा कि जिस घर में नशा आ जाता है वहां बीमारियां आ जाती है। पर्यावरण की समस्या एवं पानी की समस्या भयंकर बन रही है। पानी का दुरुपयोग न हो इस ओर ध्यान देने की जरूरत है और पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए प्लास्टिक थैलियों के प्रयोग से भी बचना चाहिए।

नगर पालिका अध्यक्ष ज्यान मोहम्मद, प्रतिपक्ष नेता राजेन्द्र आंचलिया, गिरधारीलाल पारीख ने अपने विचार रखे। अणुव्रत समिति के कार्यकारी अध्यक्ष संपतराम सुराणा ने स्वागत भाषण दिया। समिति के मंत्री मनीष पटावरी ने अणुव्रत गीत के द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया। समिति के अध्यक्ष रावतमल सैनी ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती राजूदेवी सैनी ने किया।

शीतल बरड़िया

(मीडिया संयोजक)